नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

युद्ध की आंच में झुलसती वैश्विक अर्थव्यवस्था

मध्य पूर्व में जारी युद्ध ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था कितनी नाजुक और परस्पर निर्भर है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉर्जीवा द्वारा व्यक्त चिंता केवल एक संस्थागत प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि आने वाले आर्थिक संकट का संकेत है. धीमी होती विकास दर और बढ़ती महंगाई का जो मिश्रण सामने आ रहा है, वह विश्व अर्थव्यवस्था के लिए एक कठिन दौर की शुरुआत हो सकता है.

तेल और गैस की आपूर्ति में आई 13 प्रतिशत की कमी इस संकट की गंभीरता को रेखांकित करती है. स्ट्रेट ऑफ होर्मुज जैसे सामरिक रूप से महत्वपूर्ण जलमार्ग पर तनाव का सीधा असर वैश्विक ऊर्जा बाजार पर पड़ा है. यह वही मार्ग है जिससे दुनिया के लगभग 20 प्रतिशत तेल और गैस का व्यापार होता है. ऐसे में किसी भी प्रकार की बाधा केवल क्षेत्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक संकट का रूप ले लेती है. तेल की बढ़ती कीमतें न केवल परिवहन और उत्पादन लागत को बढ़ाती हैं, बल्कि आम उपभोक्ता की जेब पर भी सीधा असर डालती हैं. चिंता की बात यह है कि यह संकट केवल ऊर्जा क्षेत्र तक सीमित नहीं है. गैस, हीलियम और उर्वरकों की आपूर्ति में व्यवधान ने कृषि और उद्योग दोनों को प्रभावित किया है. इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, 72 ऊर्जा सुविधाओं को नुकसान पहुंचा है, जिनमें से एक-तिहाई गंभीर रूप से प्रभावित हैं. यह स्थिति वैश्विक सप्लाई चेन पर दबाव को और बढ़ाती है, जिससे उत्पादन में गिरावट और कीमतों में वृद्धि तय है.

इस पूरे परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ऊर्जा निर्यातक देश भी इससे अछूते नहीं हैं. कतर जैसे देश, जो प्राकृतिक गैस के बड़े निर्यातक हैं, उत्पादन में आई क्षति से जूझ रहे हैं. यह तथ्य इस धारणा को तोड़ता है कि केवल आयातक देश ही युद्ध का खामियाजा भुगतते हैं. दरअसल, वैश्विक अर्थव्यवस्था की आपसी कड़ियों ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि किसी एक क्षेत्र में संकट का असर अंतत: सभी पर पड़ता है.

आईएमएफ द्वारा आगामी वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक में संशोधित अनुमानों का प्रस्तुत किया जाना इस बात का संकेत है कि वैश्विक विकास दर में गिरावट लगभग तय है. हाल तक 2026 में 3.3 प्रतिशत और 2027 में 3.2 प्रतिशत की वृद्धि दर की उम्मीद जताई जा रही थी, लेकिन युद्ध ने इन अनुमानों को अनिश्चितता के घेरे में डाल दिया है. महंगाई और धीमी वृद्धि का यह 'स्टैगफ्लेशन' जैसा परिदृश्य नीति निर्माताओं के लिए बड़ी चुनौती बन सकता है.

ऐसे समय में विश्व समुदाय के सामने सबसे बड़ी आवश्यकता है,संवाद और स्थिरता की दिशा में ठोस प्रयास. युद्ध किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं होता, लेकिन इसके आर्थिक दुष्परिणाम लंबे समय तक महसूस किए जाते हैं. भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह चुनौती और भी बड़ी है, जहां ऊर्जा आयात पर निर्भरता अधिक है और महंगाई का सीधा असर आम नागरिक पर पड़ता है. कुल मिलाकर यह संकट केवल आर्थिक नहीं, बल्कि वैश्विक सहयोग की परीक्षा भी है. यदि समय रहते कूटनीतिक समाधान नहीं निकाला गया, तो यह युद्ध न केवल सीमाओं तक सीमित रहेगा, बल्कि पूरी दुनिया की आर्थिक सेहत को गहरी चोट पहुंचाएगा.

महिलाओं के नेतृत्व में चौतरफा हो रहा है विकास

भारत की विकास गाथा के केंद्र में महिलाएं

विजया रहाटकर

भारत की विकास गाथा को अक्सर संख्याओं, विकास दरों, अवसंरचना विस्तार और आर्थिक उपलब्धियों के रूप में व्यक्त किया जाता है. लेकिन, पिछले दशक का सबसे बड़ा बदलाव आँकड़ों से परे है. यह एक गहरे सामाजिक बदलाव में परिलक्षित होता है—महिलाओं का केवल भागीदारके रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य को आकार देने वाले अग्रिम व्यक्तियों के रूप में उभरना. महिलाओं के नेतृत्व में विकास की ओर यह बदलाव न तो आकस्मिक है और न ही अलग-थलग है. यह एक सोच-समझकर किये गये सतत प्रयास का परिणाम है, जो जीवन के हर चरण में महिलाओं को समर्थन देने के लिए एक सक्षम इकोसिस्टम का निर्माण करता है. लड़की के जन्म से लेकर उद्यमी, पेशेवर, या सार्वजनिक प्रतिनिधि के रूप में उसकी यात्रा तक, यह दृष्टिकोण समग्र, सतत और परिवर्तनकारी रहा है.

> संस्थागत समर्थन एक महत्वपूर्ण स्तंभ रहा है. राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) ने शिकायत निवारण से आगे बढ़कर सक्रिय जुड़ाव और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में भी अपना विस्तार किया है.शी सर्व्स जैसी पहल महिला अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन करती हैं, जबकि यशोदा एआई उन्हें उभरते तकनीकी कौशल प्रदान करती है. कैंपस कॉलिंग युवाओं में जागरूकता बढ़ाता है, शी इज अ चेंज मेकर कार्यक्रम जमीनी स्तर पर नेतृत्व क्षमता को मजबूत करता हैऔर महिला जनसुनवाई सुलभ शिकायत निवारण सुनिश्चित करता है. जो उभरकर सामने आता है, वह प्रयासों का एक शक्तिशाली समन्वय है, जो महिला-नेतृत्व वाले विकास के नए युग को आकार दे रहा है.

राजनीतिक भागीदारी में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया है. निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या 12,14,885 है, जिनकी कुल 24,41,781 निर्वाचित प्रतिनिधियों में हिस्सेदारी 49.75% है—इस प्रकार, महिलाएँ जमीनी स्तर पर शासन में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं. इस क्रम में, नारी शक्ति वंदन अधिनियम एक ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी उपलब्धि है, जिसके तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण की व्यवस्था की गयी है. यह उच्च विधायी क्षेत्रों में महिलाओं की नेतृत्व क्षमता को मजबूत करने में राष्ट्र की अडिग प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करता है. इस ऐतिहासिक सुधार की वास्तविक क्षमता केवल इसके प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से ही हासिल की जा सकती है. अधिनियम की प्रावधानों को जल्द से जल्द लागू करने की आवश्यकता है, ताकि महिलाओं की आवाज़ को सिर्फ मान्यता ही न मिले, बल्कि देश की लोकतांत्रिक संरचना में इसे संस्थागत रूप से समाहित किया जा सके.इसके जल्द लागू होने से न केवल समावेशी शासन को गति मिलेगी, बल्कि यह बेहतर प्रतिनिधित्व और न्यायसंगत राजनीतिक परिदृश्य के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में भी कार्य करेगा. दशकों तक, लैंगिक पक्षपात ने भारत के जनसांख्यिकीय और सामाजिक संकेतकों को प्रभावित किया. आज, वह कहानी धीरे-धीरे फिर से लिखी जा रही है. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी पहलों ने गहरी जड़ें जमा चुकी मानसिकताओं को चुनौती देने और लड़की के मूल्य को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है. इसका प्रभाव राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5)में दिखाई देता है, जिसमें 1,000 पुरुषों पर 1,020 महिलाओं का लैंगिक अनुपात दर्ज किया गया है, जो सिर्फ संख्यात्मक सुधार ही नहीं बल्कि सामाजिक बदलाव का भी संकेत देता है. मिशन इंद्रधनुष जैसे कार्यक्रम जीवन के प्रारंभिक चरण में पूर्ण टीकाकरण सुनिश्चित करते हैं. मिशन सक्षम आंगनवाड़ी,पोषण 2.0, तथा पोषण अभियान के प्रयास कुपोषण का समाधान करते हैं—यह मानते हुए कि स्वस्थ बचपन, सशक्त वयस्कता की ओर पहला कदम होता है.

माताओं के लिए, संस्थागत समर्थन में काफी विस्तार हुआ है. पीएमएमवीवाई के तहत, 4.28 करोड़ से अधिक महिलाओं को 20,149 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि वितरित की गयी है, जो गर्भावस्था के दौरान वित्तीय सहायता प्रदान करती है. महिलाएं केवल भाग ही नहीं ले रही हैं—वे नेतृत्व भी कर रही हैं. भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम में संस्थापक और निर्णयकर्ताओं के रूप में महिलाओं की भूमिका में लगातार वृद्धि हो रही है और वे नवाचार और उद्यम में भी योगदान दे रही हैं. इस परिवर्तन में वित्तीय समावेश ने अहम भूमिका निभाई है. पीएमएमवाई के तहत, 40 लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के 57.79 करोड़ ऋण प्रदान किए गए हैं, जिनमें लगभग 66 प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं हैं. प्रत्येक ऋण केवल वित्तीय सहायता का ही नहीं, बल्कि महिलाओं की आकांक्षाओं में विश्वास का भी प्रतीक है.

(लेखिका राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष हैं)

प्रधानमंत्री मोदी के चक्रव्यूह में फंसी ममता

दिलीप झा

> 6 मार्च को सुप्रीम कोर्ट ने राज्य चीफ सेक्रेटरी, डीजीपी एवं मालदा के डीएम और एसपी को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि मालदा में जजों की सुरक्षा में चूक कैसे हुई. इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि बंगाल में हिंसा को सत्ता की मौन स्वीकृति वर्षों से रही है. हालांकि राजनीतिक हिंसा को रोकने के लिए चुनाव आयोग और सुप्रीम कोर्ट को सख्त से सख्त कार्रवाई के लिए शक्ति का प्रयोग कर रही है ताकि भयमुक्त चुनाव हो. क्योंकि वर्षो से बंगाल और केरल में सत्ता बंदूक की नली से निकलती है. बंगाल में वामपंथी हिंसा और नक्सली हिंसा कांग्रेस और सीपीएम के शासनकाल से ही चरम पर रहा है. इसलिए यह कह सकते हैं कि इस बार बंगाल में भय और विश्वास के बीच चुनाव हो रहा है. जो जनता के दिलों से डर हटाकर विश्वास कायम करने में सफल होगा वहीं सत्ता पर काबिज होगा.

पश्चिम बंगाल में दो चरण में मतदान 23 और 29 अप्रैल को होने जा रहा और परिणाम 4 मई को आएंगे लेकिन ज्यों ज्यों मतदान के तारीख नजदीक आ रहे हैं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं. दरअसल ममता सरकार के 15 साल के शासनकाल में दो लाख करोड़ के घोटाले , महिला सुरक्षा और रोजगार जैसे बड़े चुनावी मुद्दे बन गए हैं. कट मनी, कमिशन और भ्रष्टाचार राज्य में चरम पर है और यही कारण है कि 8 जनवरी 2026 को सुप्रीम कोर्ट ने ममता सरकार को कड़ी फटकार लगाई है और कहां कि स्थिति चिंताजनक है क्योंकि इससे पहले इतनी अराजकता कभी नहीं थी.

इस बार बंगाल के भद्र लोक ने अगर ममता दीदी का साथ छोड़ दिया तो चौथी बार टीएमसी सत्ता के शिखर तक नहीं पहुंच पाएगी. हालात ये है कि बंगाल से 1000 कंपनियां छोड़कर जा चुकी हैं और इसके कारण प्रदेश में रोजगार के संकट उत्पन्न हो गए हैं. बंगाल में 30 प्रतिशत आबादी मुस्लिम की है और 100 विधानसभा क्षेत्र मुस्लिम बहुल हैं. इनमें से 90 सीटों पर टीएमसी जीत हासिल करती आ रही है लेकिन इस बार टीएमसी से निकले हुमायूं कबीर ने अपनी पार्टी बना ली और 182 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर दिए हैं.

इस बीच एसआईआर में 70 लाख फर्जी वोटर के नाम कटने के बाद दीदी बौखला गई हैं और इसे रोकने के लिए मामले को सुप्रीम कोर्ट लेकर गई लेकिन वहां भी उन्हें झटका ही लगा है. सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि चुनाव आयोग स्वतंत्र बॉडी है और इसलिए उनके कामों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा. उधर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बीजेपी ने ऐसी राजनीतिक बिसात बिछाई है कि उसमें दीदी छटपटाने लगी है. पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने चुनावी रणनीति के धुरंधर भूपेन्द्र सिंह यादव, सुनील बंसल, धर्मेन्द्र प्रधान, मंगल पांडे एवं विप्लव देव को बंगाल फतह पर लगा दिया है. महिला सुरक्षा , रोजगार, और लॉ एंड ऑर्डर जैसे गंभीर मसले पर ममता सरकार घिरती जा रही है. चुनावी परिदृश्य बदल गया है. कल जो वोटर पहले लेफ्ट के साथ थे और बाद में टीएमसी के साथ आए और इस बार कहा जा रहा है कि वो वोटर अब बीजेपी के साथ आ गये है. इसे एक बड़ा परिवर्तन माना जा रहा है.

दरअसल ममता अपने 15 साल के शासन काल में पहली बार चुनौतियों के चक्रव्यूह में घिरती नजर आ रही हैं. धीरे धीरे बंगाल चुनाव दीदी या दादा के बीच बनता जा रहा है. 15 साल की एंटीइनकंबेंसी झेल रही ममता अभी से ही ईवीएम का रोना शुरू कर दी है. आक्रामक राजनीति के लिए मशहूर ममता पहली बार डिफेंसिव मूड में आ गई है. इसका मतलब है कि इस बार जनता के रुख को वह समझ चुकी है. चुनाव घोषणा के दिन ही आयोग ने बंगाल के डीजीपी, कोलकाता के पुलिस कमिश्नर,एसपी समेत 60 आईएएस और आईपीएस को चुनाव से दूर कर दिया है. इस बार के चुनाव में एआईआर की एक बड़ी भूमिका सामने आ रही है. हर सीट पर एसआईआर में लगभग 19 हजार वोट कम हुए हैं जिनमें से हर सीट पर 10 हजार अवैध वोट हटाएं गए हैं.

2021 के चुनाव में 57 सीटों पर टीएमसी ने केवल 8 हजार वोटों के अंतर से जीत हासिल की थी. दक्षिण बंगाल में 47 सीटों पर टीएमसी का कब्जा था. बता दें कि 2021 के चुनाव में 158 सीटों पर जीत का अंतर 19 हजार था. उतर और दक्षिण 24 परगना में 60 सीटें हैं और यहां सबसे ज्यादा एसाईआर में नाम कट गए हैं. पिछले चुनाव में टीएमसी को 48 प्रतिशत वोट और बीजेपी को 38 प्रतिशत वोट मिले थे. बंगाल में 7 करोड़ 66 लाख मतदाता हैं और इसमें से चुनाव आयोग ने एसआईआर के माध्यम से लगभग एक करोड़ फर्जी मतदाताओं हटाया है. गत दिनों मालदा में एसआईआर का विरोध करने के मकसद से टीएमसी के नेताओं ने चुनाव आयोग द्वारा नियुक्त जजों को बंधक बनाकर बंगाल को पूरे देश में शर्मसार कर दिया. सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस को यहां तक कहना पड़ा कि रात के दो बजे तक जगकर जजों को छुड़ाया. सुप्रीम कोर्ट ने इसके बाद सात आदेश जारी किए हैं. घटना की जांच सीबीआई और एनआईए से कराई जाए.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

केरल विधानसभा चुनाव में कड़ा मुकाबला

> चुनाव में यह देखना होगा कि क्या मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के नेतृत्व में तीसरी बार वाम मोर्चा जीतेगा या जनता इस बार परिवर्तन लाकर कांग्रेस नेतृत्व के संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे को सत्ता में लाना चाहेगी.

केरल में गुरुवार को होने जा रहे विधानसभा चुनाव में मुख्य रूप से माकपा नेतृत्व के एलडीएफ व कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ के बीच मुकाबला है. दोनों के चुनाव घोषणापत्र में समान प्राथमिकताओं को स्थान दिया गया है. इसमें स्वास्थ्य सेवा, बेहतर एमएसपी देने, बुजुर्गों की फिक्र, पेंशन में बढ़ोतरी तथा बुनियादी प्रकल्प संरचना का समावेश है. केरल में जो भी सरकारें आई हैं उन्होंने उच्च न्यूनतम वेतन, सड़कों के विस्तार, भूमि सुधार, मजबूत व्यापार तथा श्रम संगठनों पर जोर दिया. इसके अलावा सफाई, स्वच्छ पेयजल, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य पर ध्यान दिया गया. 2021 के विधानसभा चुनाव में दोनों ही मोर्चों का वोट शेयर एक समान 25 प्रतिशत था. इसलिए टक्कर बराबरी की है, लेकिन बीजेपी वोटकटवा की भूमिका निभा सकती है. केरल राजनीतिक दृष्टि से अधिक जागृत राज्य है लेकिन वहां राजनीतिक हिंसा का दौर भी रहा है. उच्च शिक्षा तथा खाड़ी देशों से आने वाले पैसे के बाद भी वामपंथियों व आरएसएस कार्यकर्ताओं के बीच संघर्ष होते रहे हैं. प्राय: हर दूसरे घर से कोई न कोई व्यक्ति मध्यपूर्व के देशों में काम कर पैसा कमा रहा है. लेकिन वहां के युद्धग्रस्त माहौल से चिंता बढ़ गई है. इस बार के चुनाव में विदेश गए केरलवासी वोट डालने से वंचित रह जाएंगे, क्योंकि हवाई यातायात बाधित है. केरल की आबादी में 26 प्रतिशत मुस्लिम और 19 प्रतिशत ईसाई हैं. बीजेपी ने ईसाइयों को अपनी ओर लुभाने की कोशिश की है, लेकिन दक्षिण भारत में उसका प्रभाव कमजोर है. चुनाव में यह देखना होगा कि क्या मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के नेतृत्व में तीसरी बार वाम मोर्चा जीतेगा या जनता इस बार परिवर्तन लाकर कांग्रेस नेतृत्व के संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे को सत्ता में लाना चाहेगी. चुनाव का एक पहलू यह भी है कि हर पार्टी ने दागियों को अपना प्रत्याशी बनाया है. उम्मीदवारों में 40 प्रतिशत दागी हैं. कुछ पर काफी गंभीर आरोप लगे हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

प्रशांत भूषण, योगेंद्र यादव के बाद राघव चड्ढा पर गिरी गाज

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, किसी भी पार्टी में प्रमुख नेता के प्रति निष्ठा और पूर्ण समर्पण जरूरी है. जो ऐसा नहीं करता और आदेश मानने की बजाय अपनी अक्ल चलाने लगता है उसे दूध से मक्खी की तरह निकालकर बाहर फेंक दिया जाता है. आम आदमी पार्टी में भी यही होता आया है. वहां केजरीवाल ही आका और सभी के काका हैं. जिसने ज्यादा होशियारी दिखाई या कुछ ज्यादा लोकप्रियता पाई उसे बोरिया-बिस्तर बांधकर निकल जाना पड़ता है. केजरीवाल से उनके जो साथी अलग हुए उनमें प्रशांत भूषण, योगेंद्र यादव, कुमार विश्वास, स्वाति मालीवाल का समावेश है.'

हमने कहा, 'अब इस लिस्ट में राघव चड्ढा का नाम भी जोड़ लीजिए जो पार्टी का माउथपीस बनने की बजाय सचमुच आम आदमी की आवाज उठाने लगे थे. उन्हें पार्टी ने राज्यसभा में उपनेतापद से हटा दिया. उन पर आरोप है कि जब मनीष सिसोदिया, सत्येंद्र जैन और केजरीवाल जेल में थे तब बीजेपी पर टूट पड़ने और मोदी सरकार की तीखी आलोचना करने के बजाय राघव चड्ढा राज्य भर में अपना प्रोफाइल बढ़ाने में लगे थे और सेल्फ-प्रमोशन कर रहे थे. उन्होंने तब एयरपोर्ट पर समोसे के ज्यादा दाम को लेकर सवाल पूछा था. राघव पर यह भी आरोप है कि केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद वह 6 महीने गायब रहे. आंख का इलाज कराने के नाम पर लंदन चले गए थे. केजरीवाल के सहयोगी सौरभ भारद्वाज ने राघव चड्ढा से कहा कि तुम बीजेपी से सवाल पूछने से डरते हो. जो डर गया वो समझो मर गया!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, राघव चड्ढा ने अपने बयान में कहा कि मैंने राज्यसभा में सक्रियता दिखाकर आम जनता के मुद्दे उठाए. एयरपोर्ट में महंगे खाने तथा टोल प्लाजा पर लूट का प्रश्न उठाया था.'

हमने कहा, 'राघव पर आरोप है कि वह बीजेपी से समझौता कर चुके हैं. उन्होंने सीईसी ज्ञानेश कुमार के खिलाफ प्रस्ताव पर हस्ताक्षर नहीं किया तथा पंजाब गए तो वहां भगवंत मान सरकार के काम में दखलंदाजी करने लगे. आप ने संसद के सेक्रेटेरिएट को पत्र भेजा है कि राघव चड्ढा को सदन में बोलने के लिए प्रतिबंधित किया गया है. इस पर राघव ने कहा- मेरी चुप्पी को हार मत समझो. मैं वो नदी हूं जो समय आने पर बाढ़ में बदल जाती है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12222

-डॉ. सागर खादीवाला

1	2		■	3			4
5		■	6		■	■	
■	7	8			9		■
10	■	11		■		■	12
13	14		■	15			
16			■		■	■	
■		■	17			18	■
19					■	20	

बाएं से दाएं
1. 1. ऋतु, काल, समय (उर्दू) 3. जिसे अपने स्थान से बलपूर्वक हटाया गया हो (सं.) 5. रात्रि (सं.) 6. दु:ख, संताप 7. सामूहिक रूप से बार-बार जय कहने की क्रिया 11. दु:ख, पीड़ा, मातम 13. पदक, मेडल 15. परिक्रमा 16. चक्षु, आंख, लोचन 17. किसी एक पक्ष पर विशेष अनुग्रह या कृपा 19. खोलना, उद्घाटन, आवरण हटाना 20. न्यास, धरोहर

ऊपर से नीचे
1. मृत्यु (उर्दू) 2. समुदाय, समूह, सभा, संघटित संस्था 3. जीत 4. गम 6. रंजन करने वाला 8. प्रशस्तिगान 9. पत्रवाहक (उर्दू) 10. गिरावट, गिरना 12. पद्धति, विविध मधुशाला 14. (उर्दू) 15. शिक्षा 17. परंतु, पंख 18. और

Solution 12221

ड	लि	या	■	बा	र	दा	ना
का	■	त	र्क	■	ज	ता	ना
र	चा	ना	■	■	नी	■	■
ना	■	■	वा	ह	■	मी	न
■	व	न	मा	नु	ष	■	ज
मा	न	स	■	मा	■	पा	र
■	दे	■	जा	न	व	र	■
आ	वी	■	ड़ा	■	■	स	ती

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में मित्रों का सहयोग मिलेगा. वाहन सुख प्राप्त होगा. शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. वर्ष के मध्य में स्थान परिवर्तन का योग है. व्यवसाय में वृद्धि होगी. वर्ष के अन्त में पूर्व निर्धारित कार्यों में रूकावटें आयेंगी. व्यर्थ वाद विवाद एवं मानसिक अशांति रहेगी. योजनायें रूक सकती हैं.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग मिलेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय मे वृद्धि होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को रूकावटों के कारण योजनायें अपूर्ण रह सकती हैं. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यों में रूकावटें आयेंगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा करना पड़ेगी. मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को मान-सम्मान प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से अच्छा मधुर एवं स्वविवेकी होगा, हष्ट पुष्ट एवं व्यक्तित्ववान होगा, शरीर कोमल होगा, यह अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, बुद्धिमानी से काम करेगा, मित्रों की संख्या सीमित रहेगी, प्रवास का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

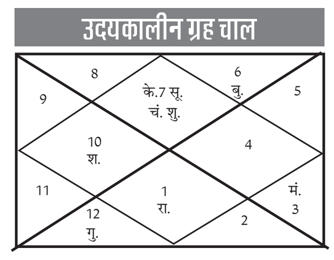

पंचांग

रा.मि. 18 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण षष्ठी बुधवासरे दिन 4/9, मूल नक्षत्रे दिन-रात, वरीयान योगे दिन 3/4, वणिज करणे सू.उ. 5/47, सू.अ. 6/13, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

मेष- जीवनसाथी की भावनाओं का सम्मान करें, परिवार में मतभेद हो सकता है, मानसिक संतुलन बनाये रखें, कामकाज के प्रति निष्ठा रहेगी.

वृषभ- आप जिसे घाटे का सौदा समझते हैं, उसमें लाभ होगा, वाहन चलाते समय सावधानी रखें, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, कामकाज के प्रति सतर्क रहें.

मिथुन- अधिकारियों की अनदेखी से नुकसान होगा, साहस पराक्रम में वृद्धि होगी, अतिथि आगमन होगा, संयम से कार्य करें. लाभ होगा.

कर्क- कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी, सुख साधनों में वृद्धि होगी, अतिथि आगमन होगा, कोई मांगलिक कार्यो की योजना बनेगी.

सिंह- अपनी गलती मानने की बजाय दूसरों को दोष देंगे, जिससे संबंध बिगड़ सकते हैं, अधिकारियों के आदेश की अवहेलना न करें.

कन्या- मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी, दूर दराज की यात्रा होगी, आर्थिक कार्यों में सावधानी रखें.

तुला- घर में किसी अतिथि आमन होने से व्यस्तता रहेगी, अचानक किसी अनसोचे कार्यो में सम्मिलित होना पड़ेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

वृश्चिक- भावनाओं पर काबू रखें, नौकरी एवं राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा, सोचे हुये कार्यो में संदेह रह सकता है.

धनु- एक से अधिक कार्य शुरू करने का मन बनेगा, धार्मिक कार्यो में खर्च होगा, विवादास्पद मामलों को सुलझायें, पदोन्नति का योग है.

मकर- मेहमानों की आवाजाही रहने से व्यस्त रहेंगे, व्यापार में सावधानी रखें, कोई नवीन सुखद समाचार मिलेगा, निजी पुरूषार्थ से लाभ होगा.

कुम्भ- बुजुर्गो के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, व्यवसाय में सफलता मिलेगी, पारिवारिक जिम्मेदारी आ सकती है, विवादास्पद कार्यो से दूर रहना हितकर रहेगा.

मीन- सकारात्मक सोच लाभकारी रहेगी, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, नवीन योजना बनेगी. शत्रु वर्ग सक्रिय रहेगा, सूझबूझ से काम बनेगा,

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण षष्ठी को मूल नक्षत्र के प्रभाव से रूई, सूत, कपास, सूत, सन, जूट, पाट, बारदाना, आदि के भाव में घटबढ़ रहेगी, सोना, चांदी, के भाव में उतार चढ़ाव आयेगा, भाग्यांक 2508 है.

SUDOKU 7354

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7353

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1